Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, SEPT-OCT, 2022, VOL- 10/73
https://doi.org/10.21922/srjis.v10i73.11660

शहीद शिरोमणी तिलका माँझी

राज कुमार, Ph. D.

सहायक प्रोफेसर, विश्वविद्यालय इतिहास विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

Paper Received On: 25 OCTOBER 2022
Peer Reviewed On: 31 OCTOBER 2022
Published On: 01 NOVEMBER 2022

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

झारखण्ड में अंग्रेजों के विरूद्ध दो तरह के विद्रोह हुए हैं। एक विद्रोह राजाओं और जमींदारों के नेतृत्व में किया गया, उनका विद्रोह अपने व्यक्तिगत स्वार्थों से प्रेरित था। जब इनके स्वार्थों की पूर्ति हो गई तब संघर्ष को उन्होने अधूरा ही छोड़ दिया। दूसरा विद्रोह का आगाज आदिवासियों के नेतृत्व में किया गया। चूँकि स्थानीय जमींदार और राजा आदिवासियों के साथ एक लम्बे समय से साथ रहने के कारण उनके रिश्ते एक दूसरे के साथ व्यक्तिगत रिश्तों में परिणित हो गये तो और वे उनके साथ बहुत क्रूर बर्ताव नहीं कर पाते थे अतएव बहुत कम लगान आदिवासियों से वसूलते थे। आदिवासियों का भी उनपर विश्वास बना हुआ था। इन्हीं कारणों से प्रारंभ में आदिवासियों ने इन राजाओं और जमींदारों के नेतृत्व में हुए विद्रोहों में इनका सहयोग किया।

झारखण्ड के आदिवासियों द्वारा हुए विद्रोहों में सबसे प्रारंभिक विद्रोह का नेतृत्व करने वाले तिलका माँझी थे, जिन्हें आज भी शहीद शिरोमणी के रूप में याद किया जाता था। आदिवासी विद्रोहों की परंपरा में अब तक का ज्ञात यह पहला बड़ा आदिवासी जननायक है। राकेश कुमार सिंह ने अपनी पुस्तक 'हूल पहाड़िया' में तिलका माँझी के जीवन संघर्ष का वर्णन करते हुए लिखा है कि ''क्रांति के इस प्रथम अग्रदूत ने राजमहल की पहाड़ियों में ईस्ट इंडिया कंपनी के विरूद्ध नगाड़ा बजाकर विद्रोह की शुरूआत की

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

थी। इस महानायक तिलका माँझी को इतिहास में वह स्थान नहीं दिया गया जिसके वह हकदार थे।''1

झारखण्ड के प्रमुख जनजातीय समुदाय संताल जनजाति में तिलका माँझी का जन्म हुआ। संताल परगना में संताल सबसे पहले 1790–1810 के मध्य में वीरभूम के उत्तरी मार्ग से आकर बसे। 'दामिन–इ–कोह' अथवा राजमहल के सीमा प्रदेश में संतालों का आगमन 18वीं शताब्दी के अंतिम दशक और 19वीं शताब्दी के प्रथम तीन दशक के मध्य उड़ीसा, धालभूम, मानभूम, बड़ाभूम, छोटानागपुर, पलामू, हजारीबाग, मिदनापुर, बांकुड़ा और वीरभूम से हुआ था। इनके यहाँ आने से पहले भी इस स्थान में सदान एवं पहाड़िया जनजातियों पर अंग्रेजों ने पूर्णरूप से अपना अधिकार स्थापित करने के लिए संतालों को यहॉ बसने के लिए आमंत्रित किया और आपस में इन्हें लड़वाया। अंग्रेज शासकों का शासन विस्तार तथा स्थानीय छोटे–बड़े जमींदारों के अत्याचार से संतालों में रोष की भावना पनपने लगी। इसी रोष के परिणाम ही संताल हूल का प्रारंभ था।

संताल गोत्र परिपाटी के अनुसार तिलकपुर गाँव के मुर्मू गोत्र के संताल परिवार में सन् 1750 ई0 में अमर शहीद तिलका माँझी का जन्म हुआ था।2 कालांतर में यही तिलका मॉझी ने 'दामिन–इ–कोह' में अंग्रेजों के विरूद्ध स्वतंत्रता आंदोलन का शुभारंभ किया था। तिलका माँझी एक दूरदर्शी, मिलनसार, कर्मठ, दबंग, कसरती, कुशल तिरंदाज और समता का भाव रखने वाला वीर पुरूष था। वह धुन का पक्का, हठधर्मी और स्वतंत्रता का परम भक्त था। उसका व्यक्तित्व भी आध्यात्मिक था। तिलका ने बचपन से ही अंग्रेजों के अत्याचार को देखा और झेला था। इनके अत्याचारों के कारण वह अंग्रेजी सरकार का घोर विरोधी हो गया था।

उस समय झारखण्ड के पर्वतीय प्रदेश के संताल जाति और अंग्रेजी सेना के बीच भयंकर विद्रोह चल रहा था। संताली अपनी भूमि को अंग्रेजों से मुक्त करने के लिए लड़ रहे थे और अंग्रेज संताली विद्रोहियों को कुचलकर पर्वतीय प्रदेश को अपने अधिकार में करना चाह रहे थे। इसी समय संतालों की तरफ से युद्ध का नेतृत्व तिलका माँझी के हाथों में थी। अंग्रेजी सेना का नेतृत्व डिस्ट्रीक मजिस्ट्रेट मि0 क्लीवलैंड द्वारा किया जा रहा था ।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तिलका माँझी से पूर्व संतालियों का नेतृत्व रमना आहड़ी और करिया पुजहर कर रहे थे।4 बाद में तिलका माँझी ने अंग्रेजों के विरूद्ध इस विद्रोह को आगे बढ़ाया। वह अंग्रेजी सरकार के कर्मचारियों व आसपास के गाँवों के गैर आदिवासियों को लूटकर गरीब पहाड़िया आदिवासियों की सहायता करता था। 1770 ई0 में जब बिहार में भयंकर अकाल पड़ा तब उस अकाल के दौरान उसने अपनी लूट से प्राप्त किए गए धन द्वारा पहाड़िया आदिवासियों की बहुत सहायता की।5 इससे पहाड़िया आदिवासियों का उसपर दृढ़ भरोसा स्थापित हो गया। इसका लाभ उठाकर तिलका माँझी ने पहाड़िया आदिवासियों को एकजूट और एकत्रित करने लगा। अब तिलका माँझी इन एकत्रित आदिवासियों का उपयोग अंग्रेजों को अपने क्षेत्र से भगाने के लिए करने लगा। उत्तर के पहाड़िया सरदार कलेक्टर क्लीवलैंड की नीतियों के समर्थक थे परन्तु दक्षिण के पहाड़िया सरदारों को तिलका माँझी ने अपने समर्थन में कर लिया।6

तिलका माँझी के इस कार्य से अंग्रेजों को प्रारंभ में यह अनुमान हो गया था कि पहाड़िया आदिवासियों को आसानी से हराया नहीं जा सकता तथा उनके समर्थन के बगैर राजमहल क्षेत्र में कंपनी सरकार को स्थापित नहीं किया जा सकता। इसलिए इस विचार को सोचकर पहाड़िया आदिवासियों को खुश करने के लिए अंग्रेजों ने नई रणनीतियाँ बनाई। कलेक्टर क्लीवलैंड को आदेश दिया गया कि वह पहाड़िया आदिवासियों का समर्थन प्राप्त करने के लिए किसी भी तरह की नीतियाँ बना सकता है और उसने ऐसा ही किया। अपनी योजना के तहत पहाड़ियॉ आदिवासियों का विश्वास प्राप्त करने के लिए वह उनके गाँवों में बिना कोई हथियार के अकेला घूमने लगा। पहाड़िया आदिवासियों के गाँवों में वह उनके साथ कई दिन और रात व्यतीत किया। उनके साथ ही वह भोजन करता, शिकार करता और उनके पर्व–त्योहारों में भाग लेता तथा उनके साथ अखरा में नाचता–गाता भी था। पहाड़िया गाँवों के मुखिया सरदारों को 10 रु0 प्रतिमाह भत्ता दिलाना शुरू किया और उनके नायब को 5 रु0 प्रतिमाह।7 यह लालच उत्तर के पहाड़िया सरदारों ने स्वीकार कर ली लेकिन दक्षिण के पहाड़िया इस बात को भलीभांति समझते थे कि यह कंपनी सरकार की कोई नई चाल है। अतः वे क्लीवलैंड के षड्यंत्र में नहीं फँसे। तिलका माँझी को इस बात का भान था कि अंग्रेज उनको गुमराह करके आपस में लड़ाना चाहते

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

थे। तिलका माँझी का एक ही नारा था ''हम सभी भारतीय संगठित हो और अत्याचारी विदेशियों को मार भगाएँ।''8

तिलका माँझी तीर–धनुष और भाला चलाने में अत्यंत कुशल था। इस विद्या में वह बाल्यावस्था में ही अभ्यस्त और पारंगत हो गए था। वह व्यायाम के साथ–साथ अपने समवयस्क मित्रों के साथ मल्लयुद्ध भी किया करते था। बड़े–बड़े वृक्षों और ताड़ के ऊँचे वृक्ष पर चढ़ना–उतरना, घने जंगलों और भयावह घाटियों में स्वछन्द विचरण करना तिलका माँझी की दिनचर्या का हिस्सा था। अपने इसी क्रियाकलापों के कारण अंग्रेजों द्वारा तिलका माँझी को जीत पाना असंभव हो गया था।

अपने एकत्रित पहाड़िया आदिवासियों को साथ लेकर तिलका माँझी ने अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह कर दिया। तिलका माँझी के नेतृत्व में भागलपुर के निकट बनचरी जोर नामक स्थान पर संताली और सभी वर्ग के लोगों ने संगठित रूप से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रथम अध्याय शुरू कर दिया।9 विद्रोह को कुचलने के लिए क्लीवलैंड को सेना के साथ भेजा गया। इन अंग्रेजों की सहायता पहाड़िया सेना 'हिल रेन्जर्स' की टुकड़ी तथा उसका सेनापति जाउराह पहाड़िया दे रहे थे। उसका दूसरा अंग्रेज अफसर सर आयर कूट था। क्लीवलैंड ने तिलका माँझी को पकड़ने के लिए एक साथ विभिन्न छः दस्ते हैबर, मौरेल, गैब्रिल, छीलर, ऑस्टिकाट और मिरफोर्ड के नेतृत्व में भेजा।10 अंग्रेजी सेना कितनी दूर है, यह देखने कि लिए तिलका एक बहुत ऊँचे ताड़ के वृक्ष पर चढ़ गया। उस समय अंग्रेजी सेना पास के स्थित झाड़ियों में छिपी हुई थी। इस दौरान क्लीवलैंड तिलका माँझी को ताड़ के वृक्ष पर चढ़ा हुआ देख लिया। इस स्थिति का क्लीवलैंड ने पूरा लाभ उठाया और घोड़े पर चढ़कर वह ताड़ वृक्ष की ओर आगे बढ़ने लगा। अंग्रेज, तिलका माँझी को हर हाल में जीवित या मृत पकड़ना चाहते थे। अंग्रेजों ने अपनी टुकड़ी को भी पीछे से आने का इशारा किया।

ताड़ वृक्ष के नीचे पहुँचकर क्लीवलैंड ने तिलका माँझी को ललकारते हुए कहा – ''तिलका तुम अपना धनुष–बाण नीचे फेंक दो और वृक्ष से नीचे उतरकर हमारे समक्ष समर्पण कर दो।''11 बहादुर तिलका माँझी ने अपनी जांघों द्वारा ताड़ वृक्ष को दबाकर अपने दोनों हाथ मुक्त कर लिया और कंधे पर टंगा हुआ धनुष को लेकर तीर के द्वारा

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

क्लीवलैंड पर निशाना बनाया। तिलका द्वारा छोड़ा गया तीर क्लीवलैंड की छाती में बहुत अंदर तक घुस गया। वह छटपटाते हुए घोड़े से नीचे गिर गया। उसके गिरने कि साथ ही तिलका माँझी ने बहुत फुर्ती के साथ ताड़ वृक्ष से नीचे उतरा और अंग्रेजी सेना के उस तक पहुँचने से पहले घने जंगलों की ओर विलीन हो गया। अंग्रेजी सेना के वहाँ पहुँचने तक क्लीवलैंड की मृत्यु हो चुकी थी। बाकी के अन्य दस्ते भी इस युद्ध में मारे गए।

अंग्रेजी सेना ने सर आयर कूट के नेतृत्व में तिलका माँझी को फँसाने के लिए एक जाल बिछाया। अपनी चाल के अनुसार अंग्रेजी सेनाओं ने तिलका माँझी और उसके साथियों का पीछा करना बन्द कर दिया। तिलका और उसके साथियों ने सोचा कि अंग्रेजी सेना निराश होकर इस क्षेत्र से वापस चली गई है। इस खुशी से तिलका माँझी और सभी संताल एवं पहाड़िया आदिवासी उत्सव मनाने लगे। जब रात्रि में वे नृत्य–गान कर रहे थे, उसी समय छिपी हुई अंग्रेजी सेना ने उनलोगों पर जोरदार आक्रमण कर दिया।12 इस आक्रमण के कारण अनेक संताली वीर मारे गए और बहुतों को बंदी बनाया गया। बहुत मुश्किल से तिलका माँझी और कुछ साथी वहाँ से निकल भागने में सफल हो गए। वहाँ से वह पर्वत श्रृंखला की ओर चले गए जहाँ से तिलका माँझी और उसके साथियों ने युद्ध जारी रखा।

अंग्रेजों ने तिलका माँझी का पीछा करना नहीं छोड़ा। अंग्रेजों द्वारा अनेक बार तिलका पर आक्रमण करने पर भी अंग्रेज उसे पराजित नहीं कर सके। बाद में 1782 में जनरल आयर कूट की स्वीकृति से क्लीवलैंड ने पहाड़िया युवकों की एक सेना तिलका के विरूद्ध संगठित कर लिया। इसका सेनापति एक खूंखार डाकू जाउराह पहाड़िया को बनाया गया।13 अंग्रेजी सरकार के अनुसार सरकारी सेवा में शामिल होने वाला जाउराह पहला पहाड़िया था। इस तरह अंग्रेजों ने पहाड़िया आदिवासियों को पराजित करने के लिए पहाड़िया आदिवासियों को ही खड़ा कर दिया।

दक्षिण के पहाड़िया आदिवासियों ने तिलका माँझी के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को दबाने के लिए क्लीवलैंड एक सेना लेकर आया। इस सेना के साथ–साथ पहाड़िया सेना 'हिल रेंजर्स' की टुकड़ी और उसका सेनापति जाउराह पहाड़िया था। इसके अलावा अंग्रेज अफसर सर आयर कूट भी अपनी एक सेना के साथ तिलका माँझी को

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पकड़ने के उद्देश्य से आया था। अंग्रेजों ने तिलका माँझी को चारों तरफ से घेर लिया था जिससे उन्हें खाद्य सामग्री भी नहीं मिल पा रही थी। अन्ततः तिलका माँझी और उनके साथियों ने अंग्रेजों से आमने–सामने युद्ध करने का विचार किया। दृढ़ संकल्प लेकर तिलका माँझी और उसके साथी एक दिन अंग्रेजी सेना पर आक्रमण कर दिया। दोनों पक्षों के बीच बहुत भयंकर युद्ध हुआ। संताल विद्रोहियों और पहाड़िया आदिवासियों ने बहुत से अंग्रेज सैनिकों को मार गिराया। भीषण युद्ध होने के बाद अन्ततः तिलका माँझी की शक्ति कम हो गई और अंग्रेजों द्वारा वह पकड़ लिया गया। गिरफ्तार करने के बाद तिलका माँझी को भागलपुर लाया गया। अपनी हानि और पराजय का बदला लेने के लिए अंग्रेजों ने उसे चार घोड़ों के पीछे मोटी रस्सियों से बाँधकर भागलपुर में सरे आम घसीटा और उसके बाद उसे बरगद के पेड़ में लटकाकर फाँसी दे दी।14

अंग्रेजों द्वारा तिलका माँझी को दिए गए इस क्रूर एवं कठोर सजा से ही अनुमान लगाया जा सकता है कि तिलका माँझी इतना साहसी था कि अंग्रेज उसे आसानी से पकड़ नहीं सके। कई बार अंग्रेजों के विरूद्ध युद्ध में गुरिल्ला पद्धति द्वारा उनके छक्के छुड़ा दिया। अंग्रेज के आधुनिक शस्त्र भी तिलका के गुरिल्ला पद्धति के सामने टिक नहीं सकी। तिलका माँझी ने अपने प्रदेश में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का बिगुल फूँकने वाला पहला वीर शहीद था। वह अंग्रेजों द्वारा अपनी जाति का शोषण सहन नहीं कर पाया। उसने संकल्प कर लिया था कि वह अपनी जाति को अंग्रेजों के अत्याचारों से मुक्त करेगा। उसके सामने एक ही विकल्प था और वह था अंग्रेजों के साथ युद्ध। वीर तिलका माँझी ने अपने संकल्प को पूरा करने के लिए आजादी की बलिवेदी पर अपने प्राणों की भेंट चढ़ा दी।

तिलका माँझी स्वाभिमानी पहाड़िया आदिवासियों के नायक बन गया था। उसने पहाड़िया आदिवासियों को अंदर और बाहर दोनों तरफ से दुश्मनों से लड़ने का पाठ बखूबी सिखाया था। एक तरफ वह बाहरी अंग्रेजों से लड़ा और दूसरी तरफ वह अपने ही समाज में पैदा हुए दुश्मनों के दलाल जाउराह पहाड़िया से भी लड़ा था। तिलका माँझी को आज भी वीर शिरोमणी के रूप में नवाजा जाता है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संदर्भ सूची

केदार प्रसाद मीणा, आदिवासी विद्रोह, अनुज्ञा बुक्स, नई दिल्ली, 2015, पृ. 86
भुवनेश्वर अनुज, झारखण्ड के शहीद, भुवन प्रकाशन, राँची, 2001, पृ. 13
क्रांतिकारी कोश, भाग 1, पृ. 145
केदार प्रसाद मीणा, पूर्वोद्धृत, पृ. 87
वही
भुवनेश्वर अनुज, पूर्वोद्धृत, पृ. 13
एल. एस. एस. ओ. मैली, संथाल परगना गजेटियर, पृ. 39
राघवशरण शर्मा विक्रमादित्य राय, झारखण्ड दर्पण, मनोहर प्रकाशन, रॉची 2014, पृ. 183
रूपक राग, हूलगुलानों के वीर शहीद, गायत्री प्रिटिंग प्रेस, राँची, 2013, पृ. 8
वही, पृ. 9
केदार प्रसाद मीणा, पूर्वोद्धृत, पृ. 86
भुवनेश्वर अनुज, पूर्वोद्धृत, पृ. 15
एल. एस. एस. ओ. मैली, पूर्वोद्धृत, पृ. 39
राघवशरण शर्मा विक्रमादित्य राय, पूर्वोद्धृत, पृ. 183
दिवाकर मिंज, कल्पाज पब्लिकेशन, दिल्ली, 2019, पृ. 47

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies